अध्याय 10

वाचा पुनः स्थापित की गई (भाग 2)

अध्याय 8 में व्यवस्था को पढ़ने के बाद, लोगों ने निश्चय किया कि वे परमेश्वर की वाचा को मानने की अपनी प्रतिज्ञा को पुनः स्थापित करेंगे। मामले के बारे में अपनी गंभीरता दिखाने के लिये, समुदाय के प्रतिनिधियों ने एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए, व्यवस्था के अनुसार जीने की शपथ खाई। वाचा को पुनः स्थापित करने का वर्णन, जिसका आरम्भ अध्याय 8 में हुआ था, यहाँ समाप्त होता है। सबसे पहले, यह उन लोगों के नाम देता है जिन्होंने हस्ताक्षर किए थे, या अपने "समझौते" पर जो उन्होंने किए थे मुहर लगाए (9:38)। तब यह विवरण मिलता है कि वे क्या करने के लिये सहमत थे।

नहेम्याह की पुस्तक के इस भाग में, यहूदी अगुवों ने वाचा दस्तावेज के लेखन और हस्ताक्षर के द्वारा व्यवस्था को बनाए रखने के लिये सार्वजनिक रूप से शपथ खाई। इस भाग की घटनाएँ (8:1-10:39) व्यवस्था के साथ शुरू और समाप्त हुईं। लोगों ने सातवें महीने के पहले दिन (8:2) पर परमेश्वर के वचन को पढ़ना और समझाना शुरू किया। फिर, महीने के पंद्रहवें दिन से लेकर बाईसवें दिन तक, यहूदियों ने झोपड़ियों या निवास का पर्व मनाया (8:14; देखें लैव्य. 23:39-43)। इसके दो दिन बाद, महीने के चौबीसवें दिन एक पश्चात्ताप सभा का आयोजन किया गया, जिसमें पिछला और वर्तमान दोनों पापों का अंगीकार शामिल था (9:1)। अन्तिम परिणाम परमेश्वर की व्यवस्था को बनाए रखने के लिये एक पुनः समर्पण था, जिसे वाचा दस्तावेज के माध्यम से व्यक्त किया गया था (9:38)। लेख का अर्थ है कि एज्रा और नहेम्याह सम्पूर्ण प्रक्रिया में पूरी रीति से शामिल थे।[1]

कुछ टीकाकार अध्याय 10 की लेखन स्थिति को सही नहीं मानते हैं। इसी कारण, उनका मानना है कि यह एक दूसरे संदर्भ से सम्बन्धित है और एक संपादक द्वारा यहाँ रखा गया था। यद्यपि, शब्द जिस संदर्भ में पाए जाते हैं, वे अच्छे अर्थ देते हैं और अध्याय में एज्रा का नाम न पाया जाना यह प्रमाणित नहीं करता है कि अध्याय का स्थान बदल दिया गया है।

वाचा पर लिखे हुए नाम (10:1-27)

हस्ताक्षर की जानेवाली लिखित पुस्तिका में, जिन्होंने हस्ताक्षर किए थे 9:38[2] में उनके तीन समूहों का उल्लेख किया गया है: "प्रधान," "लेवी," और "याजक।" जिन लोगों के नाम इसी तीन समूहों में पाए जाते हैं, वे अध्याय 10 में पाए जाते हैं, यद्यपि वे उलटे क्रम में थे।

अधिपति और याजक (10:1-8)

[1]जिन्होंने छाप लगाई वे ये हैं: अर्थात् हकल्याह का पुत्र नहेम्याह जो अधिपति था, और सिदकिय्याह; [2]सरायाह, अजर्याह, यिर्मयाह; [3]पशहूर, अमर्याह, मल्कियाह; [4]हत्तूश, शबन्याह, मल्लूक; [5]हारीम, मरेयोत, ओबद्याह; [6]दानिय्येल, गिन्नतोन, बारूक; [7]मशुल्लाम, अबिय्याह, मिय्यामीन; [8]माज्याह, बिलगै और शमायाह; ये तो याजक थे।

स्पष्ट रूप से, सबसे महत्वपूर्ण - या अधिकांश आधिकारिक - समुदाय के सदस्य लिखित समझौते पर अपने हस्ताक्षर करने वाले पहले व्यक्ति थे।

आयतें 1-8. छाप लगाई गई पुस्तिका यहूदियों की वाचा के नवीकरण का केन्द्र था। उनकी प्रामाणिकता की निश्चितता के लिये पुस्तिकाओं पर "छाप लगाई" गई थी; और किसी पुस्तिका पर छाप लगाने के बाद, उसके साथ छेड़छाड़ नहीं की जा सकती थी। जिन लोगों के नाम इस पाठ में दिए गए हैं उन्होंने या तो उनके नामों पर हस्ताक्षर किए होंगे या पुस्तिका के साथ उनके समझौते को इंगित करने के लिये अपने व्यक्तिगत मुहरों का उपयोग किया होगा।[3]

जिन्होंने पुस्तिका पर हस्ताक्षर किए थे (या जिनकी छाप लगाई गई थी) उन लोगों में पहला नाम **नहेम्याह अधिपति** का है। इब्रानी शब्द תִּרְשָׁתָא (*थिरशाथा*), का अनुवाद "अधिपति" एक फारसी शीर्षक (देखें 7:65, 70; 8:9) है। नहेम्याह के नाम के बाद सिदकिय्याह है। इन दो नामों को संयोजक **और** के साथ जोड़ा गया है, बाकी नामों से उन्हें अलग कर दिया गया है।[4] सम्भवतः, सिदकिय्याह, नहेम्याह का सचिव या कुछ अन्य राजकीय अधिकारी था।

फिर उन **याजकों** का नाम आता है जिन्होंने पुस्तिका पर हस्ताक्षर किए थे। स्पष्ट है कि, ये व्यक्तिगत नामों के बजाय अधिकांश परिवार के नाम हैं, क्योंकि इन आयतों में पाए जाने वाले कई नाम उन लोगों में भी पाए जाते हैं, जो जरूब्बाबेल (अध्याय 12) के साथ बेबीलोन से लौटे थे।[5] उदाहरण के लिये, इन आयतों से यह पता चलता है कि **सरायाह** के परिवार के प्रतिनिधि ने एक परिवार के रूप में पुस्तिका पर हस्ताक्षर किया, जैसा कि **अमर्याह** ने किया था। परिवार के नामों का उपयोग यह बताता है कि एज्रा को वाचा के हस्ताक्षरकर्ता के रूप में क्यों नहीं पहचाना गया: क्योंकि वह एक याजक और सरायाह का वंशज था, इसलिये उसने अपने परिवार की ओर से हस्ताक्षर किए होंगे। इक्कीस याजकों को समझौते पर

हस्ताक्षर करने के लिये कहा गया है।

लेवी (10:9-13)

[9]लेवी ये थे: आजन्याह का पुत्र येशू, हेनादाद की सन्तान में से बिन्नई और कदमीएल; [10]और उनके भाई शबन्याह, होदिय्याह, कलीता, पलायाह, हानान; [11]मीका, रहोब, हशब्याह; [12]जक्कूर, शेरेब्याह, शबन्याह; [13]होदिय्याह, बानी और बनीन।

आयतें 9-13. अध्याय के समूह उनके महत्व के क्रम में प्रतीत होते हैं: पहला, अधिपति (और शायद उसका सहायक); दूसरा, याजक; और तीसरा, **लेवी**; क्योंकि वे याजकों से निम्न स्तर पर थे, परन्तु सबसे निम्न समूह के लोगों से अर्थात् सामान्य प्रजा के ऊपर उनके प्रधान थे। "लेवियों" के बारे में, यह प्रतीत होता है कि व्यक्तियों के नाम का उपयोग किया जाता है और परिवारों के नहीं।[6] इनमें से कुछ लोगों के नाम नहेम्याह में और कहीं कहीं लेवियों के बीच पाया गया है, परन्तु कोई भी अन्य सूची वैसी ही नहीं है जैसी यहाँ पाई गई है। **येशू**, **बिन्नई और कदमीएल** के अलावा, **उनके** चौदह भाइयों ने आधिकारिक रूप से परमेश्वर की आज्ञा पालन की इस लिखित प्रतिज्ञा पर अपने अपने नाम सूचीबद्ध किए हैं।

प्रजा के प्रधान (10:14-27)

[14]फिर प्रजा के प्रधान ये थे: परोश, पहत्मोआब, एलाम, जत्तू, बानी; [15]बुनी, अजगाद, बेबै; [16]अदोनिय्याह, बिग्वै, आदीन; [17]आतेर, हिजकिय्याह, अज्जूर; [18]होदिय्याह, हाशूम, बेसै; [19]हारीफ, अनातोत, नोबै; [20]मग्पीआश, मशुल्लाम, हेजीर; [21]मशेजबेल, सादोक, यद्दू; [22]पलत्याह, हानान, अनायाह; [23]होशे, हनन्याह, हश्शूब; [24]हल्लोहेश, पिल्हा, शोबेक; [25]रहूम, हशब्ना, माशेयाह; [26]अहिय्याह, हानान, आनान; [27]मल्लूक, हारीम और बाना।

आयतें 14-27. प्रजा के प्रधान स्पष्ट रूप से परिवारों के प्रमुख थे। "प्रधान" (*רֹאשׁ, रोशसे)* के लिये इब्रानी शब्द का शाब्दिक अर्थ है "प्रमुख" और "मुखिया" को संदर्भित करता है। 9:38 में इन लोगों को "हमारे हाकिम" के रूप में संदर्भित किया गया है। उस गिनती में चालीस पुरुषों के नाम दिए गए हैं; जिसमें "बीस लोगों के नाम एज्रा 2 और नहेम्याह 7 की सूचियों में भी पाया जाता है।"[7] सूचियों के बीच समानताएँ दर्शाती हैं कि ये व्यक्तिगत नामों के बजाय परिवार के नाम हैं। दूसरी ओर, "गतिविधियों, बार बार विभाजन या परिवारों के विलुप्त होने जैसे कारकों के कारण अन्तर हो सकते हैं।"[8] यहाँ पाई गई विस्तृत सूची में वे लोग शामिल हो सकते हैं जो देश से निकाले जाने पर बेबीलोन को नहीं गए थे, चाहे वे यहूदा में बस गए हों या अन्य स्थानों पर छिप गए और फिर बाद में लौट आए हों। इसके अलावा, नए परिवार पुरानी पीढ़ियों की शाखाओं से उत्पन्न हुए होंगे (जैसा

कि **हिजकिय्याह** से **आतेर** का वंश विकसित हुआ है; 7:21; एज्रा 2:16)। कुछ परिवारों ने पूरी तरह से उन शहरों के नाम अपनाए जिनमें वे रहते थे (जैसे **अनाथोथ** और **नेबाई**)।[9]

पुस्तिका पर हस्ताक्षर करने वालों द्वारा पूरे समुदाय का प्रतिनिधित्व किया गया था: नहेम्याह अधिपति और सिदकिय्याह, याजक, लेवी और लोगों के प्रधान। पूरे समुदाय ने तोरह के लिये यह प्रतिक्रिया दिखाई। इसमें दुःख, उत्सव और गहरे अंतर्विरोध शामिल थे। इन लोगों को व्यवस्था के बारे में नए समाधान करने का समय आ गया था।[10]

वाचा के दायित्व (10:28-39)

हस्ताक्षरकर्ताओं की सूची के बाद, समझौते की शर्तों को निर्धारित किया जाता है। तब अपनी आवश्यकताओं को रखने के बाद व्यवस्था का पालन करने की सामान्य प्रतिज्ञा की एक प्रतिबद्धता आती है। 10:28-39 में पाए गए शब्द उस पुस्तिका के शब्द-प्रति-शब्द प्रतिलेखन के रूप में प्रतीत होते हैं यहूदियों ने जिसकी पुष्टि की और हस्ताक्षर किए।

व्यवस्था का पालन (10:28-31)

[28]शेष लोग अर्थात् याजक, लेवीय, द्वारपाल, गवैये और मन्दिर के सेवक, और जितने परमेश्वर की व्यवस्था मानने के लिये देश देश के लोगों से अलग हुए थे, उन सभों ने अपनी स्त्रियों और उन बेटे-बेटियों समेत जो समझनेवाले थे, [29]अपने भाई रईसों से मिलकर शपथ खाई, कि हम परमेश्वर की उस व्यवस्था पर चलेंगे जो उसके दास मूसा के द्वारा दी गई है, और अपने प्रभु यहोवा की सब आज्ञाएँ, नियम और विधियाँ मानने में चौकसी करेंगे। [30]हम न तो अपनी बेटियाँ इस देश के लोगों को ब्याह देंगे, और न अपने बेटों के लिये उनकी बेटियाँ ब्याह लेंगे; [31]और जब इस देश के लोग विश्रामदिन को अन्न या और बिकाऊ वस्तुएँ बेचने को ले आएँगे तब हम उनसे न तो विश्रामदिन को न किसी पवित्र दिन को कुछ लेंगे; और सातवें वर्ष में भूमि पड़ी रहने देंगे, और अपने अपने ऋण की वसूली छोड़ देंगे।

आयत 28. यह आयत उन सूचनाओं को जोड़ता है, जो **शेष लोग** के नाम हैं - वे लोग नहीं जिनके नाम पहले आए थे - वाचा के प्रावधानों से सहमत थे। इस विविध समूह में **याजक, लेवीय, द्वारपाल, गवैये और मन्दिर के सेवक,** शामिल थे। इसमें वर्णित पुरुषों की **स्त्रियों और उन बेटे-बेटियों** को भी शामिल किया गया है। ये बच्चे व्यवस्था और उन्हें दिए गए दायित्वों को समझने के योग्य हो चुके थे।

पाठ उन सब के बारे में बताता है, **जितने परमेश्वर की व्यवस्था मानने के लिये देश देश के लोगों से अलग हुए थे**। टिप्पणीकार सामान्यतः इस वाक्यांश की व्याख्या करते हैं, जो यह बताता है कि "शेष लोग" जो वाचा का पालन करने के

लिये सहमत थे, वे वही थे जो "देश देश के लोगों से अलग हुए थे।" लेस्टर एल. ग्रैबे ने इसे इस तरह कहा: "शेष लोग और मन्दिर के सेवक (याजक, लेवीय, द्वारपाल, गवैये, नेतिनिम) ने अपनी स्त्रियों और बेटे-बेटियों समेत, परमेश्वर की व्यवस्था के लिये 'देश देश के लोगों' के साथ अपने सम्बन्ध मिटा लिए।"[11] एक और सम्भावना यह है कि "जितने परमेश्वर की व्यवस्था मानने के लिये देश देश के लोगों से अलग हुए थे" वे यहूदियों के बीच उनके धर्म को अपनानेवाले हो सकते हैं। विश्वास में आए अन्यजातियों ने विशेष रूप से मूर्तिपूजा करनेवाले अपने अन्यजाति भाइयों से "स्वयं को अलग" कर लिया होगा, और वे "परमेश्वर की व्यवस्था" पर उसकी आज्ञाओं का पालन करने का वचन देकर स्वयं को उनमें शामिल कर लिये होंगे। यह व्याख्या इस संदर्भ में भी उचित ठहरती है, इसमें उन व्यक्तियों की एक और श्रेणी की आपूर्ति की जाती है जो वाचा के प्रावधानों को रखने के लिये सहमत हैं।

आयत 29. अपने भाई रईसों से मिलकर इस शपथ में सभी लोग अपने परिजनों (वास्तविकता में, "अपने भाइयों") के साथ शामिल हो रहे थे। इन "परिजनों" को रईस भी कहा जाता है। संदर्भ यहूदियों के उन प्रधानों का होना चाहिए जिनके नाम 10:1-27 में पाए जाते हैं। यहूदा के राष्ट्र ने मिलकर **परमेश्वर की व्यवस्था** को बनाए रखने की जिम्मेदारी स्वयं पर ले ली,[12] स्वयं को **शाप और शपथ** से बाँध लिया। उन्होंने **व्यवस्था** का पालन करने की शपथ के साथ प्रतिज्ञा ली और ऐसा करने में असफल होने पर परमेश्वर को उन्हें शाप देने के लिये कहा। इस शपथ को लेने में वे जिन शब्दों का प्रयोग करते थे वे प्रभावशाली होते थे। उन्होंने शपथ ली कि वे स्वयं **परमेश्वर की उस व्यवस्था पर चलेंगे जो उसके दास मूसा के द्वारा दी गई है, और अपने प्रभु यहोवा की सब आज्ञाएँ, नियम और विधियाँ मानने में चौकसी करेंगे।**[13] स्पष्ट है, इन आयतों में जोर इस बात पर दिया गया है कि सभी लोगों ने परमेश्वर की सभी व्यवस्था को मानने का वचन दिया था। इस वचनबद्धता की तुलना इस्राएल की मूल प्रतिक्रिया से की जा सकती है जब परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ वाचा बाँधी। उन्होंने कहा, "जो कुछ यहोवा ने कहा है वह सब हम नित करेंगे!" (निर्गमन 19:8;देखें 24:3)। इस दिन ये प्रतिज्ञा करके, परमेश्वर के लोग वाचा का पालन करने के लिये अपने मूल समझौते की फिर से पुष्टि कर रहे थे।

डी. जे. ए. क्लिन्स ने सोचा कि "इस्राएल द्वारा की गई यह प्रतिज्ञा स्पष्ट रूप से सीनै वाचा के समान गुण या महत्व की नहीं है, जो कि परमेश्वर की ओर से आती है।"[14] परन्तु, उनका दृष्टिकोण भ्रामक है। इस अवसर पर जो कुछ भी हुआ उसे परमेश्वर को दोहराने की आवश्यकता नहीं थी कि उसने इस्राएल के लिये क्या किया था (बल्कि वह पिछले अध्याय में प्रार्थना में शामिल था)। इसके बजाय, वाचा के इस नवीनीकरण (नई वाचा का बाँधा जाना नहीं) की आवश्यकता केवल यह है कि इस्राएल उस प्रतिज्ञा को दोहराता रहे जो इस राष्ट्र ने पहले की थी।

आयतें 30, 31. वाचा को बनाए रखने के लिये स्वयं को वचनबद्ध करने वालों ने कुछ नियमों को विशेषता दी, जिनका पालन करने की वे प्रतिज्ञा कर रहे थे। सबसे पहले, उन्होंने स्वयं को **इस देश के लोगों** के साथ विवाह नहीं करने का

वचन दिया। व्यवस्था ने ऐसे धार्मिक विवाह पर प्रतिबंध लगाया था, नस्लीय या पृष्ठभूमि के आधार पर नहीं (निर्गमन 34:12-16)। डेरेक किडनर ने कहा कि "इन संघर्ष के दिनों में सामाजिक चढ़ाई लुभावनी होती थी, और विवाह एक आकर्षक सीढ़ी प्रदान करती थी। मलाकी (2:10-16), एज्रा (9:1ff।) और नहेम्याह (13:23-29) सब को इस समस्या का सामना करना पड़ा, इससे अपने अलग-अलग तरीकों से दृढ़ता से निपटना पड़ा।[15]

इसके अलावा, जो लोग वाचा के लिये वचनबद्ध होते थे, वे **विश्रामदिन** या किसी अन्य **पवित्र दिन** (शायद किसी भी दिन जब वे व्यवस्था के अनुसार आवश्यक पर्व मनाते थे) अन्यजातियों से सामान नहीं खरीदते थे। मूसा की व्यवस्था ने विश्रामदिन के दिन खरीदने और बेचने से स्पष्ट रूप से मना नहीं किया था, परन्तु काम से दूर रहने की आवश्यकता का तात्पर्य यह होगा कि यहूदी विश्रामदिन अपनी उपज को वैध रूप से नहीं बेच सकते थे (यिर्म. 17:21, 22; आमोस 8:5)। यह भी सुझाव देता है कि उन्हें किसी पवित्र दिन पर उपज नहीं खरीदना चाहिए। इस मामले में, व्यवस्था में जो बात कही गई थी उससे यह स्पष्ट किया गया था। साथ ही, यह आयत स्पष्ट करती है कि यहूदियों के बीच कई गैर-इस्राएली रहते थे और काम करते और व्यापार करते थे।

व्यवस्था का पालन करने की प्रतिज्ञा करने वालों ने तब **सातवें वर्ष** के दायित्वों का पालन करने की प्रतिज्ञा की और अपने **अन्न** को विश्राम के वर्ष में इकट्ठा नहीं किया (निर्गमन 23:10, 11; लैव्य. 25:2-7)। उन्होंने सात वर्ष बाद अपने साथी यहूदियों को **अपने अपने ऋण** से छुटकारा पाकर स्वतन्त्र होने का भी वचन दिया (देखें निर्गमन 21:2-6; व्यव. 15:1-3)।

विशेष उल्लेख के लिये इन नियमों को क्यों चुना गया? यहूदी, अपनी "पहचान रूपी संकट" का अनुभव कर रहे थे। उस "देश के लोगों" से घिरे होने के कारण, वे परमेश्वर के विशेष लोगों के रूप में अपनी विशिष्टता खोने के खतरे में थे। अन्तर्जातीय विवाह से बचकर और विश्रामदिन के नियमों को बनाए रखने से परमेश्वर के पवित्र लोगों के रूप में उनके निरन्तर अस्तित्व को अन्य सभी से अलग सुनिश्चित करने में सहायता मिल सकती थी।

मन्दिर के लिये सहायता (10:32-39)

[32]फिर हम लोगों ने ऐसा नियम बाँध लिया जिससे हम को अपने परमेश्वर के भवन की उपासना के लिये प्रतिवर्ष एक एक तिहाई शेकेल देना पड़ेगा: [33]अर्थात् भेंट की रोटी और नित्य अन्नबलि और नित्य होमबलि के लिये, और विश्रामदिनों और नए चाँद और नियत पर्वों के बलिदानों और अन्य पवित्र भेंटों और इस्राएल के प्रायश्चित के निमित्त पापबलियों के लिये, अर्थात् अपने परमेश्वर के भवन के सारे काम के लिये। [34]फिर क्या याजक, क्या लेवीय, क्या साधारण लोग, हम सभों ने इस बात के ठहराने के लिये चिट्ठियाँ डालीं, कि अपने पितरों के घरानों के अनुसार प्रतिवर्ष ठहराए हुए समयों पर लकड़ी की

भेंट व्यवस्था में लिखी हुई बात के अनुसार हम अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी पर जलाने के लिये अपने परमेश्वर के भवन में लाया करेंगे। 35हम अपनी अपनी भूमि की पहली उपज और सब भाँति के वृक्षों के पहले फल प्रतिवर्ष यहोवा के भवन में ले आएँगे; 36और व्यवस्था में लिखी हुई बात के अनुसार, अपने अपने पहिलौठे बेटों और पशुओं, अर्थात् पहिलौठे बछड़ों और मेम्नों को अपने परमेश्वर के भवन में उन याजकों के पास लाया करेंगे, जो हमारे परमेश्वर के भवन में सेवा टहल करते हैं। 37हम अपना पहला गूँधा हुआ आटा, और उठाई हुई भेंटें, और सब प्रकार के वृक्षों के फल, और नया दाखमधु, और टटका तेल, अपने परमेश्वर के भवन की कोठरियों में याजकों के पास, और अपनी अपनी भूमि की उपज का दशमांश लेवियों के पास लाया करेंगे; क्योंकि वे लेवीय हैं, जो हमारी खेती के सब नगरों में दशमांश लेते हैं। 38जब जब लेवीय दशमांश लें, तब तब उनके संग हारून की सन्तान का कोई याजक रहा करे; और लेवीय दशमांशों का दशमांश हमारे परमेश्वर के भवन की कोठरियों में अर्थात् भण्डार में पहुँचाया करेंगे। 39क्योंकि जिन कोठरियों में पवित्रस्थान के पात्र और सेवा टहल करनेवाले याजक और द्वारपाल और गवैये रहते हैं, उनमें इस्राएली और लेवीय अनाज, नए दाखमधु, और टटके तेल की उठाई हुई भेंटें पहुँचाएँगे। इस प्रकार हम अपने परमेश्वर के भवन को न छोड़ेंगे।

अन्य नियमों पर विशेष ध्यान दिया गया क्योंकि लोगों ने मन्दिर की सेवाओं और कर्मियों का समर्थन करने के लिये वाचा को शामिल करने के लिये स्वयं को वचनबद्ध किया। इन आयतों में, दो विचारों पर जोर दिया गया है: परमेश्वर का नियम और "परमेश्वर का ... घर।" "लोगों ने वह सब कुछ करने का निर्णय लिया" जैसा कि व्यवस्था में लिखा गया है (10:34, 36)। अध्याय के अन्तिम आठ आयतों में नौ बार मन्दिर का उल्लेख किया गया है। यह अनुच्छेद भी "अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी" (10:34) के बारे में बताता है। यहूदी परमेश्वर को, उसके नियम को, उसके मन्दिर, और अपने व्यक्तिगत और सांप्रदायिक जीवन में उसके बलिदानों को प्राथमिकता देने की प्रतिज्ञा कर रहे थे।

आयतें 32, 33. लोगों ने अपनी वचनबद्धता के बारे में कहना जारी रखा, **फिर हम लोगों ने ऐसा नियम बाँध लिया** (10:32)। एक और शाब्दिक अनुवाद हो सकता है "हमने अपने आप पर आज्ञा लागू कर दी है।" यद्यपि, किसी को यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि जिन आज्ञाओं का उल्लेख किया गया था उसकी शुरुआत इस अवसर पर यहूदियों के साथ हुआ था। लकड़ी लाने की वचनबद्धता के अपवाद के साथ, वे सभी मूसा की व्यवस्था में पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त, लोग कह रहे थे कि उन्होंने इसे परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने के लिये स्वयं पर लिया था। इस भाग का शीर्षक अन्तिम आयत में पाया जाता है: "इस प्रकार हम अपने परमेश्वर के भवन को न छोड़ेंगे" (10:39)। की गई प्रतिज्ञाएँ यह सुनिश्चित करने के लिये थीं कि मन्दिर के लिये प्रावधान किया गया था। परमेश्वर के भवन को न छोड़ते यदि कुछ शर्तों को पूरा किया जाता।

मन्दिर का वार्षिक कर दिया गया। यह वार्षिक कर वहाँ से प्राप्त होता था जो वास्तव में एकमुश्त कर के रूप में निर्गमन 30:11-16 (देखें निर्गमन 38:25, 26) में मूसा द्वारा लगाया गया था। उस अवसर पर जो आवश्यक था, वह अब **वार्षिक** रूप से किया जाना है। यह शायद हर एक इस्राएली के लिये लगाया जानेवाला वार्षिक कर था। यह कर 70 ई. में रोमियों द्वारा यरूशलेम के विनाश तक लिया जाता रहा। मसीह ने स्वयं इस कर का भुगतान करके समर्थन किया (देखें मत्ती 17:24-27)।[16]

मूल रूप से, निर्गमन 30 में, जिस राशि की आवश्यकता थी, वह 10:32 में वादा किए गए **एक तिहाई शेकेल** के बजाय एक शेकेल की आधी थी। इस अन्तर को विभिन्न तरीकों से समझाया गया है। शायद सबसे अच्छा अनुमान यह है कि समय के साथ शेकेल का वजन अलग-अलग था, और इस अवधि के दौरान एक शेकेल का एक तिहाई, जो पहले के एक शेकेल का आधा था, के बराबर था।[17]

इस कर का उपयोग मन्दिर के खर्चो का भुगतान करने में सहायता करने के लिये किया जाता था: **भेंट की रोटी** और **नित्य अन्नबलि और नित्य होमबलि** (जो कि प्रतिदिन चढ़ाया जाता था), **विश्रामदिनों** और **नए चाँद** (मासिक पर्व) और **नियत पर्वों** (वार्षिक पर्वों) का अवलोकन करके किया गया खर्च, **पवित्र भेंटों** और **प्रायश्चित के निमित्त**, और परमेश्वर के भवन **के सारे काम** में शामिल अन्य खर्च। जब तक लोग इस कर का भुगतान नहीं करते थे, तब तक मन्दिर द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं की पूर्ति नहीं की जाती थी।

आयत 34. *लोगों को लकड़ी लाना था जिससे मन्दिर में बलिदान चढ़ाया जा सके।* व्यवस्था की आवश्यकता थी कि "वेदी पर अग्नि जलती रहे" (लैव्य. 6:12, 13) परन्तु वह **लकड़ी** इकट्ठी नहीं की गई जिसका उपयोग **वेदी पर** आग लगाने के लिये किया जाता था। इसलिये, समझौते के इस हिस्से को यह आश्वासन देने के लिये किया गया था कि वेदी पर चढ़ाए गए बलिदान को जलाने के लिये याजक कभी भी आग जलाने की सामग्री के लिये बाहर नहीं जाएँगे। लकड़ी इकट्ठी करना यह सुनिश्चित करने के लिये था कि व्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है और वेदी से जुड़ी हर बात को वैसा ही किया जा सके जैसा कि **व्यवस्था में लिखी हुई बात के अनुसार** किया जाता है।

लोग इस बात को निर्धारित करने के लिये **चिट्ठियाँ डालने** को सहमत हुए कि **प्रतिवर्ष ठहराए हुए समयों पर** किसे लकड़ी लाने जाना था।[18] स्पष्ट है, उदाहरण के लिये, चिट्ठियाँ डालने का उपयोग यह निर्धारित करने के लिये किया जाता था कि कौन सा समूह, वर्ष में एक महीने के लिये (या शायद एक निश्चित पर्व के लिये) और फिर कौन सा समूह उसके दूसरे महीने मन्दिर के लिये लकड़ी लाएगा। प्राचीन यहूदी विद्वानों (जोसेफस और मिशनाह) के अनुसार, इस व्यवस्था पर स्पष्ट रूप से आधारित, यहूदियों ने देखा "लकड़ी लाने का पर्व, जब हर कोई को वेदी के लिये लकड़ी लाना था। मिशनाह इंगित करता है कि यह एक वर्ष में नौ बार निर्धारित किया गया था।"[19]

आयतें 35-38. *सब लोगों को अपना पहला और अपना उत्तम भाग परमेश्वर*

के भवन में लाना था। व्यवस्था ने इस्राएलियों को उनकी फसल का **पहली उपज यहोवा** को देने की आवश्यकता बताई। यहाँ यहूदियों ने **याजकों** के समर्थन के लिये - हर फल का सबसे पहला भाग लाने के लिये सहमति जताई - उनकी फसलें, **उनके उपज, उनके बेटों**, और उनके पशु।[20] व्यवस्था ने कहा कि इस्राएलियों के उनके पहिलौठे बेटे यहोवा के लिये थे, परन्तु यह भी बताता है कि लोगों को याजकों को एक निश्चित दाम देकर अपने पहलौठों को मुक्त कराना था। इसी तरह, अशुद्ध जानवरों के पहलौठों के छुटकारे के लिये भी दाम दी जानी थी, जबकि पहिलौठे शुद्ध जानवरों को यहोवा को बलिदान के रूप में चढ़ाया जाना था (गिनती 18:15-17)।

लोगों ने **पहला गूँधा हुआ आटा,** अपनी **उठाई हुई भेंटें, और सब प्रकार के वृक्षों के फल**, और **नया दाखमधु**, और **टटका तेल याजकों के पास** लाने की शपथ भी खाई। क्लिंस के अनुसार, इस शपथ में विभिन्न तरह के "याजकों के उपयोग के लिये बलिदान की श्रेणी शामिल थीं (गिनती 18:12; व्यव. 18:4; cf. यहेज. 44:30)" जिसमें शामिल हैं "मुख्य या पसंद ... भोजन, पहली उपज से अलग है, यह पहले फल के समान नहीं है, परन्तु किसी रीति से उत्पादित है।" "गूँधा हुआ आटा" (शाब्दिक, "मोटा भोजन") "पतले अनाज" या "किसी प्रकार की रोटी या केक को दर्शाता है" सामान्य शब्द "उठाई हुई भेंटें," उन उपहारों में शामिल होता था जो किसी कारण सूची में शामिल नहीं होते थे।[21]

लोगों को लेवियों को फसल का दशमांश देना था। भूमि की पहली उपज लाने की प्रतिज्ञा के साथ, यहूदियों ने **लेवियों को** उपज का **दशमांश** (दसवां भाग, या 10 प्रतिशत) देने का वचन दिया। व्यवस्था ने लेवियों को यह दशमांश भूमि के बदले में दिया। बाकी इस्राएलियों को स्वयं की सहायता करने के लिये भूमि मिली; उनकी उपज के फसल का दसवां भाग लेवियों को देने के लिये था (गिनती 18:20-24)। एक **याजक** को उपस्थित रहना होता था जब लोग अपनी अपनी **दशमांश लेवियों** के पास लाते थे, शायद यह सुनिश्चित करने के लिये कि याजकों को भी वह सहायता मिलना था जिसके वे अधिकारी थे (गिनती 18:25-28)।

सब नगरों में लेवियों द्वारा उनके दशमांश प्राप्त करने का तात्पर्य क्या है? एक सम्भावना यह है कि नहेम्याह ने एक नया अभ्यास शुरू किया था। बीते वर्षों में, मन्दिर में दशमांश लाए जाते थे, परन्तु अब लेवी उन्हें इकट्ठा करने के लिये "सब नगरों में" में जाने वाले थे। यह हो सकता है कि अधिपति "फारसी अदालत से सीखे गए कर-संग्रह अभ्यास का पालन कर रहा था।"[22]

लेवियों को, याजकों को उनके द्वारा दिए गए दशमांश का दशमांश देना था। क्योंकि मन्दिर में याजकों की आजीविका काम कर रही थी, व्यवस्था को याजकों के द्वारा प्राप्त **दशमांशों का दशमांश** देने के लिये **लेवीय** की आवश्यकता थी।

आयत 39. *लेवियों और याजकों को दिए गए सामान को मन्दिर के कक्षों में संग्रहित किया जाना था।* यह वचन एक व्यावहारिक टिप्पणी पर समाप्त हुआ जिसमें संकेत दिया गया था कि मन्दिर और याजकों (**अनाज, नए दाखमधु, और टटके तेल**) में **उठाई हुई भेंटें** कहाँ रखी जाएँगी: **कोठरियों** में ("भंडारगृह के

कोठरियों में"; 10:38)। **पात्रों** को मन्दिर के आस-पास के क्षेत्र में मन्दिर के सेवकों द्वारा उपयोग किए जाने वाले स्थानों में भी संग्रहित किए गए थे।

फिर, कोई पूछ सकता है, "क्यों?" जब यहूदियों ने यहोवा के प्रति अपनी वचनबद्धता को नवीनीकृत किया, तो मन्दिर और उसकी सेवाओं पर इतना जोर क्यों दिया गया? इसका उत्तर शायद यहूदियों की पहचान के साथ जुड़ा हुआ है। बंधुआई से लौट आने के बाद, उन्हें दो तरह से परमेश्वर के प्रिय लोगों के रूप में पहचाना जा सकता था: वे "पवित्र भूमि" में रहते थे, परमेश्वर ने उनके पूर्वजों से प्रतिज्ञा किया था, और उनका धर्म यरूशलेम शहर में मन्दिर पर केन्द्रित था। यदि उस मन्दिर को त्याग दिया जाता - यदि उसकी सेवा टहल को **छोड़** दिया जाता - तो आसपास के राष्ट्रों में परमेश्वर के लोगों की अलग सी पहचान शायद ही हो सकती।

कुछ आदेशों पर जोर दिया जा सकता है क्योंकि यहूदियों को मालूम था कि इन आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया जा रहा है।[23] इस पुनः जागृति ने व्यवस्था को बनाए रखने के लिये वास्तविक वापसी में स्वयं को प्रकट किया।

अनुप्रयोग

प्रभावकारी नेतृत्व: जिम्मेदारी सौंपना (अध्याय 10)

अगुवों को कभी-कभी लगता है कि उन्हें स्वयं ही सब कुछ करना है; परन्तु, वास्तव में, सबसे अच्छे अगुवे कार्यों को दूसरों को सौंपते हैं, जिसे करने की आवश्यकता सबसे अधिक होती है। जिम्मेदारी सौंपने की क्षमता अच्छे नेतृत्व की मुख्य विशेषताओं में से एक है।

नहेम्याह ने उस गुण को कई तरीकों से प्रदर्शित किया। विशेष रूप से, उसने यरूशलेम की दीवार के विभिन्न हिस्सों के पुनः निर्माण की जिम्मेदारी अलग-अलग व्यक्तियों और परिवारों को सौंपी (3:1-32), और उसने योग्य लोगों को यरूशलेम की सुरक्षा का प्रभारी बनाया। उसने इस कार्य के लिये अपने भाई, हनानी और "राजगढ़ के हाकिम" हनन्याह को चुना, जो एक "सच्चा पुरुष और बहुतेरों से अधिक परमेश्वर का भय माननेवाला था" (7:2)।

शायद दूसरों को काम सौंपने की उसकी क्षमता नहेम्याह 8-10 की तुलना में कहीं अधिक स्पष्ट है। इन अध्यायों में हम सीखते हैं कि एज्रा ने लोगों के सामने व्यवस्था पढ़ा, और फिर इसे लेवियों द्वारा समझाया गया। प्रत्युत्तर में, लोगों ने शोक व्यक्त किया और फिर झोपड़ियों का पर्व मनाकर आनन्द मनाया। दो दिन बाद, वे अंगीकार और प्रार्थना की सभा के लिये इकट्ठा हुए। परिणाम, नहेम्याह 10 में जो लिखा गया है, वाचा का पुनः बाँधा जाना समारोह था। यहूदी समुदाय ने एक जागृति का अनुभव किया!

परन्तु, नहेम्याह का उल्लेख इन तीन अध्यायों में केवल दो बार किया गया है। एज्रा के साथ, लोगों को उसने आनन्दित रहने के लिये कहा (8:9); और यहूदा के अधिपति के रूप में, उसने परमेश्वर की आज्ञाओं (10:1) को मानने के लिये

लिखित प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर किए। इन चौबीस दिनों के शेष समय में नहेम्याह कहाँ था? (देखें 8:2; 9:1.) क्या इस महान जागृति की शुरुआत करनेवाले को व्यवस्था के पढ़े जाने उनका कोई लेना-देना नहीं था?

इन अध्यायों में जो भी था नहेम्याह को उससे सब कुछ लेना देना था! जब एज्रा ने व्यवस्था पढ़ा, तो वह (और अन्य) काठ के एक मचान पर खड़े थे (8:4)। उन्हें यह मचान कहाँ से मिला? नहेम्याह ने शायद उसे बनवाया था!

उसने अवसर की तैयारी की थी। परिणामस्वरूप, फिर क्या हुआ और उसके बाद वही हुआ जिसकी आशा नहेम्याह ने की थी और उसे पूरा करने की योजना बनाई थी। उसने व्यवस्था के पढ़े जाने और उसके बाद वाचा के पुनः बाँधे जाने को लागू किया था।

उसने इन अध्यायों में अधिक प्रमुख भूमिका क्यों नहीं निभाई? *क्योंकि उसने अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिये दूसरों को जिम्मेदारी सौंपी थी!* क्यों? कम से कम दो उत्तर सम्भव हैं। (1) वह आराधना में अगुवाई करने और लोगों को व्यवस्था समझाने वाले याजकों और लेवियों के बारे में जानता था। वे ऐसे कार्य थे जिसे उसने करने के लिये नहीं कहा था, बल्कि परमेश्वर द्वारा दिया गया था। इसे सिखाने और आराधना में नेतृत्व करना उसके लिये उचित नहीं होता, क्योंकि परमेश्वर ने दूसरों को वह जिम्मेदारी दी थी। (2) उसने हर समय सुर्खियों में रहने की माँग नहीं की। यदि हम यह मानते हैं कि नहेम्याह स्वयं उस पुस्तक के लिये जिम्मेदार था, जो उसके नाम की है, तो हमें इस बात से प्रभावित होना चाहिए कि उसने नहेम्याह 8-10 में हुई महान वाचा के नए किए जाने के लिये स्वयं को कभी श्रेय नहीं दिया। स्पष्ट है, वह केवल इस बारे में चिन्तित था कि क्या हुआ था और लोगों को उनकी वचनबद्धता का श्रेय देने के लिये तैयार था। वह स्वयं की बड़ाई नहीं चाहता था।

निःसन्देह, बाइबल के दृष्टिकोण से, नहेम्याह परमेश्वर के लोगों को जिम्मेदारी सौंपने वाला पहला और अन्तिम महान अगुवा नहीं था। मूसा ने यहोशू को युद्ध में इस्राएल का नेतृत्व करने की जिम्मेदारी सौंपी (निर्गमन 17:8-16), और बाद में उसने इस्राएल के न्यायिक जिम्मेदारियों को सम्भालने के लिये पुरुषों को न्यायियों के रूप में नियुक्त करने के लिये चुना (निर्गमन 18:13-27)। यीशु ने अपने प्रेरितों को दूसरों को प्रचार करने की जिम्मेदारी सौंपी कि परमेश्वर का राज्य निकट था (मत्ती 10:7)। यरूशलेम में कलीसिया में गरीब विधवाओं के लिये की जानेवाली सेवा के कार्य को देखने के लिये कलीसिया द्वारा चुने गए सात लोगों को प्रेरितों ने जिम्मेदारी सौंपी (प्रेरितों 6:1-6)।

इसी तरह, आज कलीसिया में अगुवों को यदि वे कलीसिया को सफल बनाना चाहते हैं (यद्यपि उन्हें किसी भी कार्य को करने के लिये तैयार होना चाहिए) तो उन्हें जिम्मेदारी सौंपने की कला सीखने की आवश्यकता है। जिम्मेदारी सौंपने में कौन से "नियम" का पालन किया जाना चाहिए? एक अगुवा और जिस व्यक्ति को वह जिम्मेदारी सौंपता है, उसके सम्बन्ध में छः सिद्धान्त ध्यान देने योग्य हैं:

अनुरूपता। अगुवे को प्रत्येक व्यक्ति को उसके काम के साथ मिलान करने में

सावधानी बरतने की आवश्यकता है। किसी व्यक्ति को इससे अधिक निराश करने वाली कोई बात नहीं है कि जो काम उसे सौंपा गया है, उसे संभालने के लिये वह तैयार नहीं है, और किसी संगठन के लिये इससे अधिक हानिकारक कोई बात नहीं कि वहाँ के काम अयोग्य व्यक्तियों द्वारा किए जाते हैं।

जिम्मेदारी। अगुवे को सावधानी से उस जिम्मेदारियों को बताना चाहिए जो वह उस व्यक्ति को दे रहा है जिसे उसने उस कार्य के लिये चुना है।

अधिकार। अपने कार्य को पूरा करने के लिये अगुवा को जिसे उसने जिम्मेदारी सौंपी है उसे पर्याप्त अधिकार देना चाहिए।

स्वतन्त्रता। अगुवे को चाहिए कि वह अपने तरीके से काम करने के लिये व्यक्ति को यथासंभव स्वतंत्रता प्रदान करे। कोई भी कार्यकर्ता हमेशा किसी पर्यवेक्षक की निगरानी में किसी कार्य को पूरा करने का प्रयास नहीं करना चाहता है जो हमेशा उसके प्रयासों को देखता है और उस पर प्रश्न उठाता है।

जवाबदेही। जिस कार्य को वह करने के लिये देता है उस कार्य के लिये अगुवे को प्रत्येक व्यक्ति की जवाबदेही की जानकारी रखनी चाहिए। जवाबदेही के साथ जिम्मेदारी, अधिकार और स्वतंत्रता को संतुलित होना चाहिए। कार्यकर्ता को जवाबदेह बनाने का अर्थ है कि अगुवे को यह जानने की आवश्यकता है कुछ ऐसे साधन जुटाए जिससे कि वह जान पाए कार्यकर्ता उस कार्य में किस हद तक सफल हो रहा है जो करने के लिये उसे दिया गया है।

उचित ईनाम। कार्यकर्ता को अपनी सफलता के साथ इनाम प्राप्त करना चाहिए। अपने काम के लिये पुरस्कृत सेवकों (या जवाबदेही होने के) के बारे में यीशु ने मत्ती 25:14-30 में दृष्टान्त दिया।

निष्कर्ष। एक अच्छा प्रतिनिधि होने के लिये एक अगुवे में कौन सा गुण होता है? जिम्मेदारी सौंपना बुद्धि और योग्यता की एक अच्छी परख रखता है - सही लोगों को जिम्मेदारी सौंपने के लिये ज्ञान और उनके प्रयासों का मार्गदर्शन करने में निपुणता होनी चाहिए। और यह विनम्रता का बड़ा माप है। जो अगुवा जिम्मेदारी सौंपने का विकल्प चुनता है, वह बुरा होने की बात का सामना करता है। यदि वह जिस व्यक्ति को नियुक्त करता है, वह सफल होता है, तो उस व्यक्ति की प्रशंसा और सम्मान होने की सम्भावना है, जबकि अगुवे को पर्दे के पीछे भुलाया जा सकता है। उसके पास एक विकल्प होता है: क्या वह, राजा शाऊल की तरह, अपनी सहायता करनेवाले से ईर्ष्या करेगा और उससे छुटकारा पाने का प्रयास करेगा (देखें 1 शमूएल 18:1-11); या वह खुशी-खुशी नहेम्याह की तरह अपनी भूमिका में रहेगा और जो काम पूरा हुआ है उसके लिये परमेश्वर की महिमा करेगा?

अच्छा प्रतिनिधि होने के लिये, मनुष्यों की प्रशंसा की माँग नहीं करनी चाहिए! किसी ने कहा है, "यह आश्चर्य की बात है कि कितना अच्छा किया जा सकता है यदि किसी को कोई चिन्ता न हो की किसे श्रेय मिलता है।" इस तरह का रवैया किसी मसीह अगुवे की विशेषता होनी चाहिए। जैसे नहेम्याह की, उसकी इच्छा, परमेश्वर द्वारा स्मरण किए जाने योग्य है (13:14), मनुष्य द्वारा नहीं। वह केवल तभी चिन्ता करता है जब परमेश्वर के राज्य के लिये अच्छा किया जाता है,

चाहे वह स्वयं या किसी और के द्वारा पूरा किया जाए (यहाँ तक कि उसके शत्रुओं द्वारा भी; पौलुस का रवैया देखें फिलिप्पियों 1:12-18)। यदि उसका नाम कभी भी उल्लेखित नहीं होता है, तो उसकी प्रतिक्रिया परमेश्वर की स्तुति करना है! यदि वह इस तरह का रवैया रखता है, तो मसीही अगुवा दूसरों को जिम्मेदारी सौंप सकता हैं।

समाप्ति नोट्स

[1]जोसेफ ब्लेंकिंसोप, *एज्रा-नहेम्याह*, दि ओल्ड टेस्टामेंट लाइब्रेरी (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1988), 310-11. [2]यह आयत इब्रानी बाइबल में 10:1 के रूप में गिना जाता है (देखें NAB; NJB; NJPSV)। [3]एच. जी. एम. विलियमसन, *एज्रा, नहेम्याह*, वर्ड बिब्लिकल कॉमेन्टरी, वॉल्यूम 16 (वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1985), 332. इब्रानी पाठ की अस्पष्टता के परिणामस्वरूप कई प्रकार के अनुवाद किए गए हैं: "जिन लोगों ने पुस्तिका पर अपनी छाप लगाई" (NKJV), "छाप लगाई गई पुस्तिका में नाम हैं" (NRSV) "जो लोग छाप लगाने के गवाह हैं" (REB); "मुहरों पर नाम हैं" (ESV) और "पुस्तिका को निम्नलिखित नामों से सत्यापित किया गया था और छाप लगाई गई थी" (NLT)। [4]कीथ एन. स्कॉविल ने कहा कि "NIV दिए गए सूची में याजकों के साथ *सिदकिय्याह* भी शामिल हो जाता है, परन्तु इब्रानी पाठ में 'और' नहेम्याह के नाम के साथ जुड़ता है" (कीथ एन. स्कॉविल, *एज्रा-नहेम्याह*, द कॉलेज प्रेस NIV कॉमेन्टरी [जॉपलिन, मो.: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कं., 2001], 234)। [5]डेरेक किडनर ने कहा, "यहाँ इक्कीस याजकों के नाम हैं, जिनमें कम से कम पंद्रह परिवारों के नाम हैं।" (डेरेक किडनेर, *एज्रा एण्ड नहेम्याह,* द टेंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्टरी [डाउनर्स ग्रोव, इलनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1979], 114)। [6]एफ. चार्ल्स फेनशाम, *द बुक्स ऑफ एज्रा एण्ड नहेम्याह*, द न्यू इंटरनेशनल कॉमेन्टरी ऑन दि ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1982), 236. [7]एडमिन एम. यामूची, "एज्रा-नहेम्याह," इन *दि एक्सपोजिटर बाइबल कॉमेन्टरी*, वॉल्यूम 4, *1 राजा-अय्यूब*, एडिटर फ्रैंक ई. गैबेलिन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1988), 739. [8]ए. ई. कन्डल, "नहेम्याह," इन *द न्यू बाइबल कॉमेन्टरी: रिवाइज्ड*, एडिशन, डी. गुथरी एण्ड जे. ए. मोट्यार (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1970), 409. [9]जैकोब एम. मायर्स, *एज्रा, नहेम्याह*, दि एंकर बाइबल, वॉल्यूम 14 (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे & कं., 1965), 177. [10]जोहान्ना डब्ल्यू. एच. वान विज्क-बोस, *एज्रा, नहेम्याह एण्ड एस्तेर*, वेस्टमिंस्टर बाइबल कम्पैनियन (लुईसविले: वेस्टमिंस्टर जॉन नॉक्स प्रेस, 1998), 83.

[11]लेस्टर एल. ग्रैबे, *एज्रा-नहेम्याह*, ओल्ड टेस्टामेंट रीडिंग (न्यू यॉर्क: रूटलेज, 1998), 57-58. [12]शाब्दिक रूप से, वे "शाप और परमेश्वर के नियम में चलने की शपथ *में प्रवेश करते हैं।"* [13]इब्रानी शब्द में "परमेश्वर" शब्द व्यक्तिगत नाम יהוה (*YHWH*, या "याह्वेह") है, जिसे सामान्य रूप से "परमेश्वर" अनुवाद किया जाता है। जब यह "प्रभु" (אֲדֹנָי, *अदोन)* के साथ जुड़ जाता है इसका अन्ततः अनुवाद "परमेश्वर" होता है, अंग्रेजी में अतिरेक से बचने के लिये वैकल्पिक अनुवाद ("परमेश्वर, परमेश्वर") होता है। [14]जे. ए. क्लाइंस, *एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर*, द न्यू सेंचुरी बाइबल कॉमेन्टरी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1984), 200. [15]किडनर, 115. [16]जेम्स बर्टोन कोफ्मेन एण्ड थेल्मा बी. कोफ्मेन, *कॉमेन्टरी ऑन एज्रा, नहेम्याह एण्ड एस्तेर* (अबीलेन, टेक्सास: ACU प्रेस, 1993), 205-6. [17]अन्य सम्भावनाओं के लिये, देखें यामूची, 742. [18]"चिट्ठियाँ" डालना घास फूस का चित्र बनाने के समान था। परमेश्वर की इच्छा को निर्धारित करने के लिये यहूदियों ने इस पद्धति का उपयोग किया। [19]स्कोविल, 238; देखें जोसेफस वार्स 2.17.6 देखें; मिश्ना *ताहिंथ* 4.5. [20]"पहला फल" और "पहिलौठे" से सम्बन्धित नियमों के बारे

में देखें निर्गमन 13:2, 12-15; 22:29, 30; 23:19; 34:20, 26; लैव्य. 27:26, 27; गिनती 18:15-17; 28:26; व्यव. 15:19; 26:1-4.

[21]क्लिन्स, 209. [22]स्कॉविल, 238. [23]एच. जी. एम. विलियमसन ने कहा कि ये विशेष नियम "कुछ मामलों में जहाँ समुदाय के विशेष रूप से घट रहे हैं, या तो उपेक्षा के माध्यम से या व्यवस्था की आवश्यकताओं के पूर्ण महत्व की सराहना करने में विफल रहने के कारण" (विलियमसन, 333)।